अध्याय चौथा

गोदान में आर्थिक पक्ष

`गोदान` में आर्थिक पक्ष —

भारत की आर्थिक परिस्थिति का अनुमान गाँवों की जनता देखकर लगाया जा सकता है। प्रेमचंदजी ने इसलिए अपने युग की आर्थिक स्थिति के विश्लेषण के लिए गाँवों को ही चुना है। गाँवों के अन्दर रहनेवाले लोग अधिकतर किसान हैं। यदि किसान आर्थिक विषमता का शिकार है तो देश विपन्न है। यही मूल भावना प्रेमचंदजी की प्रतीत होती है। किसान की आर्थिक दुर्दशा किस सीमा तक पहुँच गई है इसका सुस्पष्ट सुलेख `गोदान` के कथानक में सम्पन्न हो गया है। नगर में निस्सन्देह औद्योगिक उन्नति हो रही है। मिल कारखाने स्थापित हो रहे हैं। गाँव के लोग इन कारखानों में मजदूरी करने के लिए शहरों की ओर भागते जा रहे हैं। किसान अपने घर में, खेतों में पीड़ित है, शोषित है, नगर में मजदूर बनकर जाता है तो वहाँ भी शोषित हो रहा है। उसकी असहायावस्था देश की असहायावस्था है। देश की सम्पन्नता किसान की सम्पन्नता पर निर्भर है। यही युग भावना `गोदान` में प्रतिकालित हुई है। होरी के माध्यम से किसान की आर्थिक हीनता का स्पष्टीकरण किया गया है। इसीप्रकार के विचार किसान की स्थिति के सम्बन्ध में डॉ. रामबक्ष रखते है —

`प्रेमचंद मानते हैं कि किसान समाज का आधार होता है। समाज का उत्पादक वर्ग किसान है उसी की उन्नति से देश की उन्नति सम्भव है। उसकी बदहाली देश की बदहाली है।`[१]

समाज में सबसे ज्यादा शोषित और पीड़ित किसान ही होता है। `गोदान` के अंतिम पृष्ठों में रामसेवक यही विचार रखता है —

---

१ डॉ. रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१७६-१७७
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७,
प्रथम संस्करण - १९८२

` यहाँ तो जो किसान है, वह सब का नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे, तो गाँव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिन्दों का पेट न भरे तो निबाह न हो। थानेदार और कानिसिटिबिल तो जैसे उसके दामाद हैं। जब उनका दौरा गाँव में हो जाय, किसानों का धरम है, वह उनका आदर-सत्कार करें, नजर-नियाज दें, नहीं एक रिपोर्ट में गाँव का गाँव बँध जाय। कमी कानूनगो आते हैं, कमी तहसीलदार, कमी डिप्टी, कमी जण्ट, कमी कलक्टर, कमी कमीसनर। किसान को उनके सामने हाथ बाँधे हाजिर रहना चाहिए। उनके लिए रसद-चारे, अंडे-मुर्गी, दूध-घी का इन्तजाम करना चाहिए। तुम्हारे सिर भी तो वही बीत रही है महाराज। एक-न-एक हाकिम रोज नए-नए बढते जाते हैं। एक डाक्टर कुओं में दवाई डालने के लिए आने लगा है। एक दूसरा डाक्टर कभी-कभी आकर ढोरों को देखता है, लड़कों का इम्तहान लेनेवाला इसपिट्टर है, न जाने किस-किस महकमें के अफसर हैं, नहर के अलग, जंगल के अलग, ताडी शराब के अलग, गाँव सुधार के अलग, खेती विभाग के अलग। कहाँ तक गिनाऊँ ? पादडी आ जाता है, तो उसे भी रसद देना पड़ता है, नहीं शिकायत कर दे। और जो कहो कि इतने महकमों और इतने अफसरों से किसान का कुछ उपकार होता हो, तो नाम को नहीं कभी जमींदार ने गाँव पर हल पीछे दो-दो रुपये चन्दा लगाया। किसी बडे अफसर की दावत की थी। किसानों ने देने से इनकार कर दिया। बस, उसने सारे गाँव पर जाफा कर दिया। हाकिम भी जमींदार ही का पच्छ करते हैं। यह नहीं सोचते कि किसान भी आदमी हैं, उनके भी बाल-बच्चे हैं, उनकी भी इज्जत-आबरु है। और यह हमारे दब्बूपन का फल है।`[१]

` गोदान` का होरी कृषक जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। होरी का जीवन आर्थिक संघर्षों की करुण कहानी है —

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२९२ -
सरस्वती प्रेस, २४३, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-२

` प्रेमचंद ने मुख्य रुप से शोषण के उन रुपों को सामने रखा , जो कि भारतीय किसान के दैनिक जीवन से सम्बध्द थे, जिनका मूर्तिमान रुप किसान के सामने प्रत्यक्ष था,जिसे समझाने से किसान समझ सकता था । किसान के दैनिक अनुभवों से अलग,दूरस्थ साम्राज्यवादी नीतियों और रुपों को चित्रित करने का प्रयास प्रेमचंद ने नहीं किया । मसलन ` गोदान` में किसान के शोषकों की कतार में खन्ना भी है, जो बैंकर है । रायसाहब बैंक से कर्ज लेना चाहते हैं, खन्ना उनसे कमिशन माँगता है । जाहिर है कि रायसाहब जो कमिशन और सूद देंगे, वह होरी जैसे किसानों से ही वसूल होगा । इस तरह होरी के शोषण में बैंकों का भी हाथ हुआ । खन्ना शक्कर की मिल खोलता है,किसानों से गन्ने खरीदता है, इसतरह गुड का कार्य बन्द करवाता है । मिल के मैनेजर से मिलकर सूदखोर झिंगुरीसिंह किसानों के रुपये ले लेता है । शोषण के इस अप्रत्यक्ष से लगने वाले रुप को किसान अपनी व्यावहारिक बुध्दि से समझ सकता है ।प्रेमचंद ने इसे समझाया है ।` [१]

` उपन्यास में किसानों की आर्थिक,सामाजिक,धार्मिक तथा राजनीतिक समस्याओं का उद्‌घाटन किया गया है । किसानों का भयानक दारिद्र्य,उनका अनुकम्पनीय अज्ञान, उनकी विवशता,जमींदारों तथा साहूकारों व्दारा उनका शोषण, उनके अंधविश्वास, काल-बाह्य नैतिक आदर्श उनकी धर्म-भीरुता आदि का वर्णन कर प्रेमचंद ने ग्रामीण जन-जीवन को साकार एवं मुखर बना दिया है ।[२]

` गाँव से लेकर शहर तक शोषण का चक्र चल रहा है । होरी जैसे किसानों की तो खैरियत नहीं । शहरी पूंजीपति मि.खन्ना ने महाजनी कोठी खोल रखी है । बेलारी गाँव का झिंगुरीसिंह इसी शहरी महाजन का दलाल है ।

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१७९
वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७
प्रथम संस्करण १९८२

२ डॉ.ह.के.कडवे : हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति-पृ.२१७
अन्नपूर्णा प्रकाशन,१०६।१५४,गांधीनगर,कानपुर-१२
प्रथम संस्करण - १९७८

वह महाजनी और दलाली दोनों उपायों से किसानों का अर्थ शोषण करता है।`[1]

`गोदान` का किसान सभी तरह से शोषित होता है। उसकी अवस्था बहुत ही दयनीय हो जाती है --

`जमींदारों, साहूकारों व महाजनों के चंगुल में फंसा निर्धन कृषक वर्ग जी तोड परिश्रम करने पर भी भरपेट भोजन एवं वस्त्र प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। अपने युग के इस सत्य का यथातथ्य चित्रण प्रेमचंद ने `गोदान` और `प्रेमाश्रम` उपन्यासों में किया है।`[2]

`भारतीय किसान की विपन्नता इतनी अधिक है कि साल भर परिश्रम करने के बाद भीउसकी तो बात ही छोडिए उसके बच्चे तक को रुखा भोजन प्राप्त नहीं होता। होरी की यही दशा थी महीनों से उसे भर पेट भोजन न मिला था।`[3]

`दोनों जून न मिले, एक जून तो मिलना ही चाहिए। भर-पेट न मिले, आधा पेट तो मिले। निराहार कोई के दिन रह सकता है। उधार ले तो किससे ? गाँव के छोटे-बडे महाजनों से तो मुँह चुराना पडता था। मजूरी भी करे, तो किसकी ? जेठ में अपना ही काम ढेरों था। ऊख की सिंचाई लगी हुई थी, लेकिन खाली पेट मेहनत भी कैसे हो।`[4]

दो-जून खाने को भी न मिले तो वस्त्रों की बात सोचना भी अलग है। फिर भी लाज ढकने के लिए फटा-पुराना भी क्यों न हो चाहिए ही। होरी

---

१ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६७
ओम प्रकाशन,३०-बी,केवल पार्क एक्सटेंशन,
आजादपुर-दिल्ली-३३,प्रथम संस्करण - १९८७

२ डॉ.सुमित्रा त्यागी : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन - पृ.३१-३२
साहित्य-प्रकाशन,मालीवाडा,दिल्ली-१
प्रथम संस्करण - १९७८

३ डॉ.ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.१२७
जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२,
प्रथम संस्करण - १९७९

४ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१२५ सरस्वती प्रेस,२४३,अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली-२.

के पास एक कम्बल है वह उसके जन्म के पहले की है और एक मिर्जई भी फटी हुई है। होरी के जीवन में दरिद्रता का भयानक रुप दिखायी देता है --

` किसान की दरिद्रता का यह अभिशाप खाने-पहनने से ही वंचित करके समाप्त नहीं होता। अर्थ का भयंकर अभाव वहाँ अखरता है जब होरी के एक नहीं तीन बच्चे बिना औषधि के काल के ग्रास हो जाते हैं। बच्चों की मृत्यु से अधिक पश्चाताप धनिया को उनका इलाज न कर सकने का था।`[१]

` उसकी छ: सन्तानों में अब केवल तीन जिन्दा हैं, एक लड़का गोबर कोई सोलह साल का, और दो लड़कियाँ सोना और रुपा, बारह और आठ साल की। तीन लड़के बचपन ही में मर गए। उसका मन आज भी कहता था, अगर उनकी दवादारु होती तो वे बच जाते, पर वह एक धेले की दवा भी न मँगवा सकी थी।`[२]

निर्धनता का अभिशाप इससे बढकर और क्या हो सकता है --

` गोदान` में अर्थ अनेक स्तरों पर सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को बनाता बिगाड़ता है किंतु अधिकांश उपन्यास और कहानियों में एक आदर्श की स्थापना कर दी गई है।`[३]

` गोदान` में प्रेमचंदजी ने अनेक पदों के साथ आर्थिक पदा को अधिक मात्रा में उजागर किया है --

`` ग्राम्य जीवन का निरुपण करते समय प्रेमचंद ने इस उपन्यास में भारतीय ग्रामों की अर्थ-व्यवस्था, कृषकों की शोचनीय स्थिति, शोषक वर्गों की मनोवृत्ति, सामंतवाद का पोषण, प्रकृति-चित्रण, ग्रामीण समाज में व्याप्त

---

१ डॉ.ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.१२८
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा-२,
प्रथम संस्करण - १९७९

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.७- सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ संपादक - दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि -पृ.९१
भावना प्रकाशन, दिल्ली-९२,
प्रथम संस्करण-१९८२

रीतिरिवाज तथा लोक संस्कृति के अनन्य चित्र उपस्थित किये हैं।'[१]

' संपूर्ण साधारण कार्यव्यापार में पुही-गुंथी छोटी-छोटी संघटनाओं एवं पात्रों व्दारा सारे शहरी-देहाती समाज का तीखा सामाजिक-आर्थिक-संस्कृतिक विश्लेषण हुआ है।'[२]

नगर का मजदूर भी शोषित है। इस युग में शोषण का दमनकारी चक्र बडी तीव्रता से घूम रहा है। मेहता मिस्टर खन्ना को इन मजदूरों की शोचनीय स्थिति का बोध कराने के लिए कहते हैं —

' आपके मजदूर बिलों में रहते हैं - गंदे बदबूदार बिलो में — जहाँ आप एक मिनट भी रह जायँ, तो आपको कै हो जाए। कपडे जो पहनते हैं, उनसे आप अपने जूते भी न पोंछेंगे। खाना वह जो खाते हैं, वह आपका कुत्ता भी न खाएगा। मैंने उनके जीवन में भाग लिया है। आप उनकी रोटियाँ छीनकर अपने हिस्सेदारों का पेट भरना चाहते हैं।...'[३]

जमींदारी और शोषणवृत्ति —

प्रेमचंदजी ने ' गोदान' में किसानों के शोषण का चित्रण किया है —

' उन्होंने प्रमुखत: किसानों की बदहाली का चित्रण किया है। जब भी उनका कोई शहरी पात्र गाँव में जाता है और जिसमें मानवीय भावनाएँ हों, वह इसी तथ्य को रेखांकित करता है कि किसानों की दशा अत्यंत करुण है। यहाँ तक कि गोबर भी शहर जाकर जब वापस आता है तो उसे यह हीनावस्था खलती है। गाँववासियों को इसमें कोई खास बात नजर न आती हो, क्योंकि यह

---

१ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद - पृ.७५
सामयिक प्रकाशन,३४४३
जटवाडा दरियागंज,दिल्ली-६, संस्करण १९७८

२ रमेश कुंतल मेघ : वाग्मी हो,लो। - पृ.७६ - पंचशील प्रकाशन,
फिल्म कालोनी,चोडा रास्ता,जयपुर-३
प्रथम संस्करण १९८४

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२४०, सरस्वती प्रेस,३ ४३,अंसारी रोड,
नई दिल्ली-२

हीनावस्था उनकी दैनिक जिन्दगी का इतना अंग बन चुकी है कि वे इसे ही प्राकृतिक और सहज अवस्था मान लेते हैं।'[१]

गोबर कुछ दिन शहर रहकर जब पहली बार अपने गाँव वापस आता है तो उसे घरकी दूरावस्था का अंदाज तुरन्त हो जाता है —

' गोबर को उतनी देर में घर की परिस्थिति का अंदाज हो गया था। धनिया की साडी में कई पेबंद लगे हुए थे। सोना की साडी सिर पर फटी थी और उसमें से उसके बाल दिखाई दे रहे थे। रुपा की धोती में चारों तरफ झालरे-सी लटक रही थीं। सभी के चेहरे रूखे, किसी की देहपर चिकनाहट नहीं। जिधर देखों, विपन्नता का साम्राज्य था।'[२]

प्रेमचंदजी ने किसानों की आर्थिक स्थिति को देखकर ही उनकी दशा का चित्रण किया होगा। उन्होंने किसानों की दूरावस्था पर ज्यादा ध्यान दिया है। 'गोदान' के अंतिम पृष्ठों में रामसेवक ने जो किसान की स्थिति का वर्णन किया है उसके पीछे भी यही दृष्टि काम कर रही है। इस स्थिति का मूल कारण लगान है। किसानों के शोषण का प्रमुख कारण लगान और उससे संबंधित कानूनी तथा गैरकानूनी कर है। 'गोदान' की धनिया सोचती है कि —

' यद्यपि अपने विवाहित जीवन के इस बीस बरसों में उसे अच्छी तरह अनुभव हो गया था कि चाहे कितनी ही कतर-ब्योंत करो, कितना ही पेट-तन काटो, चाहे एक-एक कौडी को दाँत से पकडो, मगर लगान बेबाक होना मुश्किल है।'[३]

इस सम्बन्ध में डॉ.अरुणा चतुर्वेदी का कहना है कि — 'गोदान' में प्रेमचंदजी ने किसानों की दयनीय दशा का बहुत सुंदर चित्रण किया है। होरी

---

१ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१८८
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१७४ - सरस्वती प्रेस, २।४३, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.७ - सरस्वती प्रेस २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

तथा उसके अन्य किसान-मित्र कभी-कभी जमींदार को पूरा लगान नहीं चुका पाते हैं। उन पर तीन-तीन चार-चार साल का लगान चढ जाता है।`[१]

प्रेमचंदजी ने भूमि कर को किसान के शोषण का मुख्य माध्यम माना है। जमींदारी प्रथा में भी कई स्थानीय असमानताएँ विद्यमान थी। परंपरागत किसान का लगान बकाया हो, तो वह उसपर बकाया लगान का दावा करके उसे खेत से बेदखल करना चाहता है। `गोदान` में नोखेराम होरी को इसी आधारपर धमकाना चाहते हैं। अक्सर जमींदार किसानों को लगान की रसीद नहीं देते। `गोदान` में नोखेराम भी रसीद नहीं देता। नोखेराम जब बेदखली की धमकी देता है तो गोबर उससे कहता है --

`अच्छी बात है,आप बेदखली दायर कीजिए। मैं अदालत में तुमसे गंगाजली उठवाकर रुपए दूँगा, इसी गाँव से एक सौ सहादतें दिलाकर साबित कर दूँगा कि तुम रसीद नहीं देते। सीधे-सादे किसान हैं, कुछ बोलते नहीं, तो तुमने समझ लिया कि सब काठ के उल्लू हैं।`[२]

होरी उन तमाम गरीब किसानों का प्रतिनिधि है, जिन्हें भरपेट मोटा-झोटा अनाज भी मयस्सर नहीं होता --

`जमींदारों, साहूकारों व महाजनों के चंगुल में फँसा निर्धन कृषक वर्ग जी तोड़कर परिश्रम करने पर भी भरपेट भोजन एवं वस्त्र प्राप्त करने में असमर्थ रहता है।`[३]

किसानों की किसानी इसीतरह खतरे में रहने के कारण कुछ किसान उनकी प्रशंसा करने में लगे रहते हैं। इसी तरह के विचार डॉ.बदरी प्रसादजी ने व्यक्त किये हैं --

---

१ डॉ.अरुणा चतुर्वेदी - गाँधी विचारधारा और हिन्दी उपन्यास -पृ.१३० कल्पकार प्रकाशन,५२,बादशाह नगर, लखनऊ-७,प्रथम संस्करण १९८३

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१८७ - सरस्वती प्रेस,२४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

३ डॉ.उर्मिला त्यागी : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन, पृ.३१,साहित्य प्रकाशन, मालीवाडा,दिल्ली-६,प्रथम संस्करण-१९७८

`गोदान' के किसानों की किसानी खतरे में है। अंग्रेजी हुकूमत से उपजी सामन्तवादी समाज-व्यवस्था ने होरी की मनोभावना का गला घोंट डाला है। इसी मन:स्थिति के कारण वह महसूस करता है कि उसकी गर्दन दूसरों के पांवों तले दबी है, जिन्हें सहलाने में ही कुशल है। वह जमींदार से बिना मिले एक दिन भी चैन नहीं पाता। वह समझाता है कि इसी मिलने-जुलने का प्रसार है कि उसे बेदखली या कुर्की जैसे जमींदारी हादसे का शिकार नहीं होना पडा। किन्तु यह उसका भ्रम था। शोषण और परेशानी के अनेक रुप थे, जिनसे वह कभी त्राण नहीं पाता।'[१]

इतना ही नहीं जमींदारों व्दारा किसानों की इससे बढकर दुर्दशा की जाती है —

`किसानों से जब एक ही खेत का लगान दो-तीन बार वसूल किया जाता है, तब एक स्थिति ऐसी आती है जब वह रुपये नहीं जूटा पाता और इस तरह उसे मौरुसी खेत से बेदखल कर दिया जाता है और उसी खेत को सिकमी बनाकर नजराने और लगान बढाकर दूसरे किसान को दे दिया जाता है। इससे किसान खेतिहर मजदूर बनने के लिए मजबूर कर दिया जाता है।'[२]

जमींदार किसानों पर बकाया लगान का दावा ऐसे अवसरों पर करता है जब किसान संकट में होता है। `गोदान' में रायसाहब ने बकाया लगान की माँग तब की, जब बरसात हुई थी और किसान बीज बोने के लिए जा रहे थे। इस तरह रायसाहब का चरित्र दो तरह का दिखायी देता है —

`रायसाहब का चरित्र उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रतीत होता है जो एक ओर तो जनता के श्रध्दा पात्र बनने के लिए जेल जाते हैं और अपने

---

१ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६८
ओम प्रकाशन, ३०-बी, केवल पार्क एक्स्टेंशन,
आजादपुर, दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण-१९८७

२ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१९१
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

राष्ट्रवादी होने का परिचय देते हैं दूसरी ओर जमींदार परम्परा का निर्वाह करने के लिए नजरे और डालियाँ भेजकर सरकार के भी कृपापात्र बने रहते हैं।[१]

जमींदार रायसाहब अपने विचारों से उच्च सिध्दांतों की चर्चा करते हैं परंतु सिध्दान्त के अनुसार बर्ताव नहीं करते -

'गोदान' के रायसाहब उच्च सिध्दान्तों की बातें करते हैं किन्तु जहाँ उनके स्वार्थ पर आँच आती है। वहीं वे आपे से बाहर हो जाते हैं।'[२] चपरासी से यह सुनकर कि बेगारों ने काम करने से इन्कार कर दिया है। वे कहते हैं --

'चलो, मैं इन दुष्टों को ठीक करता हूँ। जब कभी खाने को नहीं दिया, तो आज यह नई बात क्यों ? एक आने रोज के हिसाब से मजूरी मिलेगी, जो हमेशा मिलती रही है, और इस मजूरी पर काम करना होगा, सीधे करें या टेढे।'[३]

जमींदारी प्रथा में जमींदार यह प्रयास करते हैं कि जमीन को अपने अधिकार में लिया जाय, दूसरी ओर किसान भी इस प्रयास में लगा रहता है कि किसी तरह जमींदार के अधिकार की जमीन पर पैतृक अधिकार प्राप्त करें। इसलिए किसान गाँव के कारिंदा की प्रशंसा करता है, रिश्वत देता है। कुछ किसान अपने ही किसान भाईयों के विरुध्द जमींदार से मिल जाते हैं। 'गोदान' में मातादीन ऐसे ही किसान है, जो स्वयं रक्षा के लिए किसानों के सामुहिक हित पर आघात करते हैं।

'गोदान' की कथा अवध प्रान्त के बेलारी तथा आस-पास के ग्रामों की है। अवध प्रान्त में वर्तमान समय में पैतृक जमीन बिल्कुल नहीं थी, इसी कारण वहाँ लगान की समस्या सबसे अधिक है। जमींदार के अधिकार की जमीन को

---

१ डॉ.ज्ञान अस्थाना -हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.१२७
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा-२,
प्रथम संस्करण १९७९

२ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२७०
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण -१९७९

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१५-१६- सरस्वती प्रेस, २४३, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-२

जमींदार किसान को दबाने के लिए उपयोग में लाता है। जब कोई किसान किसी जमींदार की आज्ञा का पालन नहीं करता तो जमींदार जमीन छुडाने की धमकी देता है।

` लगान किसान के शोषण का कानूनी रुप है, इसके अलावा कुछ परंपरागत रुप भी हैं, जो भारतीय किसान सदियों से देता आया है अत: उसे भी वैध मानता है। प्रेमचंद की रचनाओं में जमींदारों के उन तमाम हथकंडों का चित्रण मिलता है, जिनसे वे किसानों का शोषण करते हैं। उत्पादन में जमींदार की कोई भूमिका नहीं होती, फिर भी वह ठाट-बाट से रहता है। न केवल वह,बल्कि उसके नाते-रिश्तेदार भी कुछ काम नहीं करते और किसानों पर तरह-तरह के अत्याचार करते रहते है।[१]

भारतीय किसान और जमींदार के सम्बन्धों पर निम्न पंक्तियों में अच्छा प्रकाश डाला है --

` भारतीय किसान की जीविका खेती है। इस खेती जीवी किसान को चारों ओर से शोषक शक्तियाँ घेरे हुए हैं। किसान का सीधा सम्बन्ध जमींदार से था। जमींदार किसान और सरकार के बीच मध्यस्थ्य था। जमींदार किसान से इतना ज्यादा पैसा वसूल करता था कि वह स्वयं ठाठ बाट से रह सके और विदेशी सरकार को माल गुजारी भी दे सके।`[२]

` गोदान` में रायसाहब के यहाँ एक पार्टी है और साथ ही रामलीला का आयोजन किया गया है। इसके लिए शगुन के नाम पर बीस हजार रुपये एकठ्ठा करना है। होरी को भी पाँच रुपये देने है, जिसकी चिंता उससे सताती है --

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१९२-१९३
वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७
प्रथम संस्करण १९८२

२ संपादक - दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि -पृ.८८
भावना प्रकाशन,दिल्ली-९२
प्रथम संस्करण - १९८२

`होरी ने अपना डण्डा उठाया और - घर चला। शगुन के रुपये कहाँ से आयेंगे, यही चिन्ता उसके सिर-पर सवार थी।`[१]

किसानों से नक्द रकम लेने के नजराना, जुर्माना, दस्तूरी, चन्दा के अलावा और भी तरीके हैं। गाँव की सम्पूर्ण जमीन का मालिक जमींदार होता है। अत: व्दार पर खूँटा गाडने के लिए भी नजराना देना पडता है —

`यह इसी सलामी की बरक्त है, कि व्दार पर मड्या डाल ली और किसी ने कुछ नहीं कहा। घूरे ने व्दार पर खूँटा गाडा था, जिस पर कारिन्दों ने से दो रुपए डाँड ले लिये थे।`[२]

किसानों के शोषण के अन्य अनेक रुपों में प्रमुख है — बेगार लेना। जमींदार के प्रशासनिक, सामाजिक या घरेलू - हर एक काम के लिए वह किसी भी व्यक्ति को बेगार में ले सकता है। `गोदान` में रामलीला के अवसर पर बेगार लेना जमींदार का हक माना गया है। इस बेगार के बदले उसे खाना भी नहीं मिलता। जिस दिन उसे बेगार करना पडता है उसी दिन उसे भूखा रहना पडता है। `गोदान` के रायसाहब भी बेगारों को खाना देने के पक्ष में नहीं थे। प्रेमचंदजी ने बेगार को सहज, साधारण और परंपरागत अधिकार के रुपमें चित्रित किया है। बेगार के बिना जमींदार जमींदार ही नहीं लगता, चाहे वह कितना ही छोटा जमींदार क्यों न हो।

प्रतापनारायण टण्डन ने इस प्रथा पर अच्छा प्रकाश डाला है —

`नगरों की पूँजीवादी और शोषण परक व्यवस्थाने गाँवों की शांति और संतोषमय व्यवस्था को अपने मिथ्या आडम्बर और प्रलोभन से उन्मूलित कर दिया है। यद्यपि सामन्तवाद की समाप्ति हो रही है, परंतु अपने

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६ - सरस्वती प्रेस, रा ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६ - सरस्वती प्रेस, रा ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

विनाश की स्थिति में भी वह कृषकों के शोषण का एक माध्यम बनी हुई है। जमींदार स्वयं आधुनिक पूँजीवाद और शासकीय शोषण के शिकार हैं। अत: वह इसकी कसर अपनी जमींदारी में रहने वाले कृषक वर्ग से पूरी करते हैं।'[१]

महाजन और शोषणवृत्ति --

महाजनों से तात्पर्य ऐसे धनिक वर्ग के लोगों से है, जो धन के आधार पर उच्च वर्ग की श्रेणी में आता है। उनका लेन-देन ही जिसका व्यापार हो, धन से धन कमाने की प्रक्रिया व्दारा जो पूँजीवाद को प्रश्रय देता है।'[२]

प्रेमचंदजी के समय उत्तरी भारत में महाजनों व्दारा किसानों के शोषण का धंदा खूब फूला-फला। उस समय शायद ही कोई किसान बचा हो, जिस पर कर्ज न हो। जिसके पास कुछ रुपये इकठ्ठा हो गये, वह महाजन बन बैठता था। व्याज की दर अधिक थी। स्वयं होरी ने कुछ दिन महाजनी की थी। शहर में जाकर गोबर ने भी कुछ दिनों तक थोडे-बहुत रुपये उधार देकर ब्याज कमाया था --

' अब वह छोटा-मोटा महाजन है। पडोस के इक्केवालों, गाडीवानों और धोबियों को सूद पर रुपए उधार देता है। इस दस-ग्यारह महीने में ही उसने अपनी मेहनत और किफायत और पुरुषार्थ से अपना स्थान बना लिया है और अब झुनिया को यही लाकर रखने की बात सोच रहा है।'[३]

---

१ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद, पृ.७५, सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाडा दरियागंज, दिल्ली-६ संस्करण - १९७८

२ डॉ. कमला गुप्ता : हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२७६-२७७ अभिनव प्रकाशन २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२ प्रथम संस्करण १९७९

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६८ - सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

'गोदान' में प्रेमचंदजी ने महाजनों के शोषण का अधिक मात्रा में वर्णन किया है। ये महाजन धार्मिक प्रवृति के होते हैं। महाजन की धार्मिकता का अर्थ हमारी समझ में तब आता है जब कोई किसान इनके रुपये देने से इन्कार करता है। ऐसे अवसर पर यही धर्म महाजनों के पदा में खडा हो जाता है। अगर महाजन ब्राह्मण हुआ तो धर्म उसके लिए महान अस्त्र के समान उपयोगी साबित होता है। 'गोदान' में पं.दातादीन के रुपयों का हिसाब करते हुए गोबर उन्हें ७० रुपये देने के लिए तैयार होता है। दातादीन कानून नहीं जानते। उन्होंने होरी की धार्मिक चेतना को उकसाते हुए कहा --

'सुनते हो होरी, गोबर का फैसला ? मैं अपने दो सौ छोड्के सत्तर रुपए ले लूँ, नहीं अदालत करूँ। इस तरह का व्यवहार हुआ तो के दिन संसार चलेगा ? और तुम बैठे सुन रहे हो, मगर यह समझ लो, मैं ब्राह्मण हूँ, मेरे रुपए हजम करके तुम चैन न पाओगे। मैं ने ये सत्तर रुपए भी छोडे, अदालत भी न जाऊँगा, जाओ। मगर मैं ब्राह्मण हूँ, तो अपने पूरे दो सौ रुपए लेकर दिखा दूँगा। और तुम मेरे व्दार पर आयोगे और हाथ बाँधकर दोगे।'[१]

इससे स्पष्ट है कि धर्म महाजनी शोषण का बडा भारी रक्षक है, इसी कारण प्रत्येक महाजन धर्म की रक्षा में खडा रहता है। किसान भी धर्म-भीरुता के कारण सब सह लेते हैं --

'किसान अपनी अशिक्षा और धर्म भीरुता के कारण सब का अत्याचार सह कर भी मौन था। धर्म ने उसे इतना सहिष्णु और कुण्ठित बना दिया था कि वह अत्याचार को अपने ही पाप और पूर्वजन्म के कर्मों का फल मान बैठा था।'[२]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१८४ - सरस्वती प्रेस,२४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

२ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२७७-२७८ अभिनव प्रकाशन,२१-ए,दरियागंज,नई दिल्ली-२, प्रथम संस्करण - १९७९

`गोदान` में किसानों के शोषण के लिए सूदखोरों को ही मुख्य रूपसे जिम्मेदार ठहराया गया है --

`जमींदार तो एक ही है, मगर महाजन तीन-तीन हैं, सहुआइन अलग और मंगरु अलग और दातादीन पण्डित अलग।`[१]

`सबसे बडे महाजन थे झिंगुरीसिंह। वह शहर के एक बडे महाजन के एजेण्ट थे। उनके नीचे कई आदमी और थे, जो आस-पास के देहातों में घूम-घूमकर लेन-देन करते थे। इनके उपरान्त और भी कई छोटे-मोटे महाजन थे, जो दो आने रुपये ब्याज पर बिना लिखा-पढी के रुपए देते थे।`[२]

इन महाजनी शोषण का आधार डॉ.रामबदा जमींदारी प्रथा में निहित मानते है --

`इन महाजनों के शोषण का आधार जमींदारी व्यवस्था में निहित है। किसानों का शोषण करने के लिए जमींदार कभी इजाफा लगान का दावा करता है, कभी बकाया लगान का दावा करता है। जमींदार ऐसे नाजूक समय पर किसानों से लगान माँगते है, जब उनके पास रुपए नहीं होते। ऐसे नाजूक समय में महाजन किसानों का हमदर्द ब रक्षक बनकर खडा होता है। `गोदान` में रायसाहब ने आसाढ में रुपये माँगे। किसान महाजनों के पास दौडे।`[३]

महाजन किसानों का शोषण करता है साथ ही एहसान भी जताता है --

`गोदान` में दातादीन तक सभी एहसान जताते आते हैं। थानेदार को रिश्वत देने के लिए झिंगुरीसिंह ने रुपये दिये , तब भी इसी रुप में होरी के पास बैल नहीं हैं, दातादीन आता है और वे साझे में खेती करने का प्रस्ताव रखता

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२१, सरस्वती प्रेस,२४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.८६ - सरस्वती प्रेस,२४३ ,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ डॉ.रामबदा : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१९९ वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर दिल्ली-७ प्रथम संस्करण - १९८२

है। खेत मजूरी होरी करेगा, बीज और बैल दातादीन देंगे। फसल दोनों की आधी-आधी होगी।'[१]

मोला अपनी गाय के अस्सी रुपये के बदले में होरी के दोनों बैल खोल ले जाता है। होरी अब किसान से मजदूर बन जाता है। होरी, धनिया तथा उसकी दोनों लडकियाँ भी दातादीन के जमीन में काम करने जाते है --

' बनिये-महाजन कर्ज के महाजाल में उन्हें आजीवन फंसाए रखते हैं। किसानों की पूरी कमाई महाजनों की कर्ज अदायगी में स्वाश हो जाती है। ' गोदान' के होरी की ऋण-समस्याउसके आगे मौत का पैगाम लिए निरंतर खडी रही। ऋणग्रस्तता ने होरी के किसानी जीवन को बर्बाद कर डाला और उसे किसान से मजदूर बना डाला।'[२]

प्रेमचंदजी ने' गोदान' में एक स्थानपर किसान के कर्ज के सम्बन्ध में एक ही पंक्ति में महत्वपूर्ण बात कही है ---

' कर्ज वह मेहमान है, जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।'[३]

महाजनी सभ्यता के कारण किसान लाचार और खुशामदी हो गया है --

'' झूठी शान और गलत समझ के ही कारण होरी समझता है कि इन महाजनों से ही कुछ हो सकता है, अन्यथा पाँच बीघे वाले किसान की औकात ही क्या ? होरी को लूटने वाले गुण्डों की टोली है। वह इसका खून - चुस रहे हैं। जमींदार, साहूकार, महाजन, सहुआइन ये उनके अलग-अलग रुप है। इनका सर्वग्रासी रुप बहुत ही भयानक है।'[४]

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१९९
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण १९८२

२ डॉ.बदरी प्रसाद : प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६४
आम प्रकाशन, ३० बी, केक्ल पार्क एक्स्टेंशन,
आजादपुर दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण -१९८७

३ प्रेमचं : गोदान - पृ.८७, सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-२

४ डॉ.पीताम्बर सरोदे - आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना - पृ.६३-६४, अतुल प्रकाशन, १०७ २९
ब्रह्मनगर, कानपुर-१२, संस्करण जून -१९८७

स्वयं होरी के ही शब्दों में ---

` अनाज तो सब-का-सब खलिहान में ही तुल गया । जमींदार ने अपना लिया, महाजन ने अपना लिया । मेरे लिए पाँच मन अनाज बच रहा । यह भूसा तो मैंने रातोंरात ढोकर छिपा दिया था, नहीं तिनका भी न बचाता । जमींदार तो एक ही है, मगर महाजन तीन-तीन हैं, सहुआइन अलग और मंगरु अलग और दातादीन पण्डित अलग । किसी का ब्याज भी पूरा न चुका । जमींदार के भी आधे रुपए बाकी पड गए । सहुआइन से फिर रुपए उधार लिये तो काम चला । सब तरह किफायत करके देख लिया भैया, कुछ नहीं होता । हमारा जन्म इसीलिए हुआ है कि अपना रक्त बहाएँ और बडों का घर भरें । मूल का दुगूना सूद भर चुका, पर मूल ज्यों-का-त्यों सिर पर सवार है ।`[१]

महाजनी शोषण के रुप को संपादक दयानंद पाण्डेयजी ने भी स्पष्ट किया है --

` महाजनी सभ्यता का बृहद रुप शहरों में था मगर वह छोटे-छोटे साहूकारों और ऋण दाताओं के रुप में देहातों में भी विराजमान था । छोटे-छोटे बनिया और सूदखोर महाजन किसानों को ऋण के जाल में उलझाते थे उनके घर व्दार नीलाम कराते थे और उनके अनाज खलिहान में से तोलवा लेते थे ।`[२]

किसानों की दशा दिनों-दिन खराब होती जाती थी । हर रोज कोई-न-कोई नया संकट उनके सामने आ जाता तो किसान संकट से उबारने के लिए साहूकार के पास चला जाता । किसानों की दरिद्रता का प्रत्यय स्वयं साहूकारों को भी आता है । दुलारी सहुआइन कहती है --

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२१-२२- सरस्वती प्रेस, २ । ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ संपादक - दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि - पृ.८८ भावना प्रकाशन, दिल्ली-९२, प्रथम संस्करण - १९८२

`और असल बात तो यह है कि किसी के पास है ही नहीं, दें कहाँ से। सब की दशा देखती हूँ, इसी मारे सबर कर जाती हूँ। लोग किसी तरह पेट पाल रहे हैं, और क्या।`[१]

होली के पर्व का उपयोग करते हुए `नक़ल` के माध्यम से रचनाकार ने महाजनी शोषण का पर्दाफाश किया है। महाजन के पास एक किसान दस रुपये उधार लेने आता है। महाजन उसे पाँच रुपये देता है और कहता है कि ये दस रुपए हैं, घर जाकर गिन लेना। किसान जब हठ करता है तो महाजन बताता है —

`एक रुपया नजराने का हुआ कि नहीं ?`

`हाँ, सरकार।`

`एक तहरीर का ?`

`हाँ, सरकार।`

`एक कागद का ?`

`हाँ, सरकार।`

`एक दस्तूरी का ?`

`हाँ, सरकार।`

`एक सूद का ?`

`हाँ, सरकार।`

`पाँच नक़द, दस हुए कि नहीं ?`

`हाँ, सरकार। अब यह पाँचों भी मेरी ओर से रख लीजिए।`

`कैसा पागल है ?`

`नहीं सरकार, एक रुपया छोटी ठकुराइन का नजराना है, एक रुपया बड़ी ठकुराइन का। एक रुपया छोटी ठकुराइन के पान खाने को, एक बड़ी

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२१३, सरस्वती प्रेस,
२।४३, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-२

ठकुराइन के पान खाने को । बाकी बचा एक, वह आपकी क्रिया-करम के लिए ।`[१]

` दातादीन ने होरी को ३०। - रुपये दिये थे, जिसके ब्याज सहित २००। - रुपये हो गये । मंगरु ने पहले-पहले ५०। - रुपये दिये थे । पाँच-छः साल बाद तीन सौ रुपये वसूल करने पहुँचे । इसीतरह दुलारी और झिंगुरीसिंह भी चार-पाँच गुना रुपया वसूल करते हैं । अक्सर किसान रुपये अदा नहीं कर पाते, उनके खेत महाजनों के हाथ में आते जाते हैं और खेत मजूरों की संख्या बढती जाती है ।`[२]

प्रेमचंदजी ने गोदान में दिखाया है कि किसान दिन-ब-दिन मजदूर बनते जा रहे हैं । इसके लिए जिम्मेदार समाज की कुछ शक्तियाँ है । जमींदार और महाजन कभी अलग-अलग और कभी मिलकर किसान को इस हालत में पहुँचाते हैं । अंत में हम डॉ.पंजीयार के शब्दों में कह सकते हैं ---

` पुरानी सभ्यता में विकसित जमींदार वर्ग से भी कहीं ज्यादा घातक सिध्द हुआ वर्तमान सभ्यता के सम्पर्क में आया हुआ महाजन वर्ग । शोषण पहले भी था, पर इतना कटु नहीं था । महाजन वर्ग ने व्यापार को अपना लक्ष्य बनाया । धन संचय की मानो धूम मच गयी । पैसा ही इनके लिए सब-कुछ हो गया ।`[३]

किसानों का आर्थिक दैन्य --

भारत की आर्थिक परिस्थिति का अनुमान गाँवों की जनता को देखकर लगाया जा सकता है । प्रेमचंदजी ने इसलिए अपने युग की आर्थिक स्थिति विश्लेषण

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६२- सरस्वती प्रेस, २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२०० वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७ प्रथम संस्करण - १९८२

३ डॉ.राजेन्द्र पंजियार - हिन्दी कथा साहित्य पूर्व परिच्छेद - पृ.१२७-१२८ अंकुर प्रकाशन, १।३०१७, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२, प्रथम संस्करण-१९८५

के लिए गाँवों को ही चुना है। गाँवों के अन्दर रहनेवाले लोग अधिकतर किसान है। यदि किसान आर्थिक विषमता का शिकार है तो देश विपन्न है। यही मूल भावना 'गोदान' में प्रेमचंदजी की प्रतीत होती है। किसान की आर्थिक दुर्दशा किस सीमा तक पहुँच गयी है इसका सुस्पष्ट सुलेख 'गोदान' में संपन्न हो गया है। किसान अपने घर में, खेतों में पीड़ित है, शोषित है नगर में मजदूर बनकर जाता है तो वहाँ भी शोषित हो रहा है। उसकी असहायावस्था देश की असहायावस्था है। देश की संपन्नता किसान की संपन्नता पर निर्भर है। यही युग भावना उपन्यास में प्रतिफलित हुई है। होरी के माध्यम से किसान की आर्थिक हीनता का स्पष्टीकरण किया गया है।

प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में किसान का सहज, सरल जीवन सामने रखा है। प्रारंभ में ही होरी और धनिया के बीस-पच्चीस वर्षों की गृहस्थी की दशा इस माध्यम से सामने रखी है —

'हर एक गृहस्थी की भाँति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित चली आती थी। यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न, सबसे बड़ी साध थी। बैंक सूद से चैन करने या जमीन खरीदने या महल बनवाने की विशाल आकांक्षाएँ उसके नन्हें-से-हृदय में कैसे समातीं।'[१]

इसतरह प्रेमचंदजी ने प्रारंभ में ही स्पष्ट किया है कि एक सामान्य किसान होरी अपने जीवन में सिर्फ एक गाय पालने की ही इच्छा पैदा किये हुए है। इससे उसकी आर्थिक दिनता का परिचय मिलता है। होरी कृषक जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। होरी का जीवन आर्थिक संघर्षों की करुण कहानी है। जीवन निर्वाह के लिए भोजन की समस्या सबसे भयंकर है —

'होरी की फसल सारी की सारी डाँड की भेंट हो चुकी थी। वैशाख तो किसी तरह कटा, मगर जेठ लगते - लगते घर में अनाज का एक दाना न रहा। पाँच-पाँच पेट खानेवाले और घर में अनाज नदारद। दोनों जून न मिले, एक जून तो

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.८ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

मिलना ही चाहिए । भरपेट न मिले,आधा पेट तो मिले । निराहार कोई कै दिन रह सकता है । उधार ले तो किससे ? गाँव के छोटे-बड़े महाजनों से तो मुँह चुराना पड़ता था । मजूरी भी करे, तो किस की ? जेठ में अपना ही काम ढेरों था । ऊख की सिंचाई लगी हुई थी । लेकिन खाली पेट मेहनत भी कैसे हो ।`[1]

किसान की दुर्दशा का चित्रण सरोदे जी ने भी किया है --

`मेहनत करनेवाला अपनी मर्यादा के रक्षा के हित अनेकानेक कष्ट उठानेवाला होरी भारतीय कृषक का सच्चा प्रतीक है । मर्यादा की रक्षा में पागल-सा हुआ होरी मजदूरी कर अपने जीवन को ही होम कर देता रहा, वह भूखे किसानों का नग्नचित्र है । अन्न पैदा करके भी वह भूखा है, कपास उगाकर भी वह नंगा है ।`[2]

`जब दो जून चबेना भी न मिले तो वस्त्रों की बात सोचना भी व्यर्थ है किन्तु लाज ढकने को कुछ तो चाहिए ही - फटा पुराना ही सही ।`[3]

`गोदान` उपन्यास में होरी की आर्थिक दयनीय स्थिति संपूर्ण कृषक वर्ग की स्थिति का प्रतीक है । होरी अपने जीवन की छोटी-छोटी जरुरतें भी पूरी नहीं कर पाता । भरपेट भोजन और वस्त्र ही उसे नहीं मिलते तब दूध-घी व्यंजन मिल जाए यह कैसे संभव है --

`जमींदारों , साहूकारों व महाजनों के चंगुल में फँसा निर्धन कृषक वर्ग जी तोड़कर परिश्रम करने पर भी भरपेट भोजन एवं वस्त्र प्राप्त करने में असमर्थ रहता है ।`[4]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ. ८ सरस्वती प्रेस,२।४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

२ डॉ.पीताम्बर सरोदे - आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना - पृ.६३,अतुल प्रकाशन, १०७। २९५ ब्रह्मनगर,कानपुर-२,संस्करण जून -१९८७

३ डॉ.ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.१२८ जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२, प्रथम संस्करण - १९७९

४ डॉ.सुमित्रा त्यागी : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन - पृ.३१,साहित्य प्रकाशन, मालीवाडा,दिल्ली- प्रथम संस्करण-१९७८

होरी की आर्थिक दशा बडी ही दयनीय है। आर्थिक संकटों से लडते रहने पर भी उससे उबार नहीं होता इसका परिणाम घर के सभी सदस्यों पर पडता है। धनिया भी सोचती है --

` तीन लडके बचपन में ही मर गए। उसका मन आज भी कहता था,अगर उनकी दवा दारु होती तो वे बच जाते, पर वह एक धेले की दवा भी न मँगवा सकी थी। उसकी ही उम्र अभी क्या थी। छत्तीसवाँ ही साल तो था, पर सारे बाल पक गए थे,चेहरे पर झुर्रियाँ पड गयी थी। सारी देह ढल गई थी, वह सुन्दर गेहुआँ रंग सँवला गया था, और आँखों से भी कम सूझने लगा था। पेट की चिन्ता ही के कारण तो।`[१]

होरी के घर में गाय आने से वह बडा प्रसन्न होता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे साक्षात लक्ष्मी ने उसके घर में पदार्पण किया --

` होरी श्रध्दा विह्वल नेत्रों से गाय को देख रहा था,मानो साक्षात देवीजी ने घर में पदार्पण किया हो। आज भगवान ने यह दिन दिखाया कि उसका घर गऊ के चरणों से पवित्र हो गया। यह सौभाग्य। न जाने किस के पुण्य प्रताप से।`[२]

होरी के जीवन में यह प्रसन्नता अधिक दिन नहीं रह पाती। हीरा होरी की गाय को विष देता है।होरी की असीम भावनाओं का स्वप्न भंग हो जाता है। इसके पश्चात् होरी जीवन पर्यन्त गाय खरीदने के लिए प्रयत्न करता है। वह प्राय: मनमें आकांक्षा रखता है कि उसके पास गाय कब होगी ? उसकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती और वह जमींदार,साहूकार,पुलिस,पंचायत तथा धर्म की रक्षा करनेवाले आडम्बरी पण्डितों के कठोर और निर्मम शोषण चक्र में इस तरह से पिसता रहता है कि उसके व्दार पर कभी गाय नहीं बंध पाती। ` गोदान` में कर्ज और गरीबी के बोझ से दबे हुए किसानों की स्थिति बडी दयनीय-सी प्रतीत होती है --

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.७ - सरस्वती प्रेस,२।४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.३३ - सरस्वती प्रेस ,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

`और यह दशा कुछ होरी ही की न थी। सारे गाँव पर यह विपत्ति थी। ऐसा एक आदमी भी नहीं, जिसकी रोनी सूरत न हो, मानो उनकी प्राणों की जगह वेदना ही बैठी उन्हें कठपुतलियों की तरह नचा रही हो। चलते-फिरते थे, काम करते थे, पिसते थे, घुटते थे, इसलिए कि पिसना और घुटना उनकी तकदीर में लिखा था। जीवन में न कोई आशा है, न कोई उमंग, जैसे उनके जीवन के सोते सूख गए हो और सारी हरियाली मूरझा गई हो।`[१]

`सामने जो मोटा-झोटा आ जाता है, वह खा लेते हैं, उसीतरह जैसे इंजिन कोयला खा लेता है। उनके बैल चूनी चोकर के बगैर नाँद में मुँह नहीं डालते, मगर उन्हें केवल पेट में कुछ डालने को चाहिए। स्वाद से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं। उनकी रसना मर चुकी है। उनके जीवन में स्वाद का लोप हो गया है। उनसे धेले-धेले के लिए बेईमानी करवा लो, मुट्ठीभर अनाज के लिए लाठियाँ चलवा लो। पतन की वह इन्तहा है, जब आदमी शर्म और इज्जत को भी भूल जाता है।`[२]

`प्रेमचंदजी ने `गोदान' में भारतीय कृषक की पतनोन्मुख अवस्था का चित्रण करते हुए ग्रामीण समाज और व्यवस्था के विश्रृंखलन का संकेत भी किया है। नगरों की पूँजीवादी और शोषण परक व्यवस्था ने गाँवों की शांति और संतोषमय व्यवस्था को अपने मिथ्या आडम्बर और प्रलोभन से उन्मूलित कर दिया है।`[३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९४, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचं - गोदान - पृ.२९४, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ प्रतापनारायण टंडन : प्रेमचंद, पृ.७५, सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाडा दरियागंज, दिल्ली-६ संस्करण - १९७८

भारतीय अर्थ व्यवस्था कृषि तथा उद्योग-धंदों पर आधारित है। प्रेमचंद युग में गाँवों के आर्थिक जीवन की सबसे बडी विशेषता यह है कि यहाँ के अधिकांश निवासी जीविका के लिए कृषि पर निर्भर थे। 'गोदान' में कृषि-संस्कृति एवं कृषि सम्बन्धी विपत्तियों का उल्लेख करते हुए एक स्थान पर प्रेमचंदजी ने लिखा है —

'मगर जब चौमासा आ गया और वर्षा न हुई, तो समस्या अत्यंत जटील हो गई। सावन का महीना आ गया था और बगूले उठ रहे थे। कुओं का पानी भी सूख गया था और ऊख ताप से जली जा रही थी। नदी से थोडा-थोडा पानी मिलता था, मगर उसके पीछे आये दिन लाठियाँ निकलती थीं। यहाँ तक कि नदी ने भी जबाब दे दिया।'[१]

खेतों की फसल खलिहानों में आ सके, उससे पहले उसकी रक्षा करने का भार कृषक पर ही होता है। कभी-कभी बैल खेत जोतते जोतते ही मर जाते हैं। इस समय खेत जोतना कठिन हो जाता है। होरी 'गोदान' में ऐसी स्थिति का सामना करता है। भोला गाय के रुपयों के बदले उसके बैल खोलकर ले जाता है और होरी सोचने लगता है —

'मगर बैलों के बिना खेती कैसे हो ? गाँवों में बोआई शुरु हो गई। कार्तिक के महीने में किसान के बैल मर जायँ, तो उसके दोनों हाथ कट जाते हैं। होरी के दोनों हाथ कट गए थे। और सब लोगों के खेतों में हल चल रहे थे। बीज डाले जा रहे थे। कहीं-कहीं गीत की तानें सुनाई देती थीं। होरी के खेत किसी अनाथ अबला के घर की भाँति सूने पडे थे। पुन्निया के पास भी गोई थी, शोभा के पास भी गोई थी, मगर उन्हें अपने खेतों की बुआई से कहाँ फुरसत कि होरी की बुआई करें। होरी दिन-भर इधर-उधर मारा-मारा फिरता था। कहीं इसके खेत में जा बैठता, कहीं उसकी बोआई कटा देता। इस तरह कुछ अनाज मिल जाता।'[२]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१२७ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ - वही - पृ.१४९ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

खेती की दूरावस्था के मूल में अनेक ऐसे छोटे-मोटे कारण थे, जिन्होंने एक साथ मिलकर एक विकट आर्थिक समस्या का रुप धारण कर लिया था। समय के साथ किसान की आर्थिक दैन्यावस्था जटील से जटील होती जाती थी ।

' समाज के आर्थिक शोषक जोकों ने चारों ओर से इतना शोषण किया कि उसका सारा अस्तित्व ही मिट गया। गरीब किसानों पर अत्याचार करने वाले जमींदार के कारिंदों ने लगान वसूली की रसीद न देकर दुबारा लगान का दावा पेश किया, मंगरुशाह, पं.दातादीन और झिंगुरीसिंह जैसे सूदखोर महाजनों ने कर्जे देकर परेशान किया। अन्यायी और स्वार्थी पंचों ने आर्थिक दण्ड देकर तबाह किया। पं.दातादीन ने धर्म का भय दिखलाकर शोषण किया। अन्यायी पुलिस ने रिश्वत लेने की दबरदस्ती की।'[१]

होरी की गाय को हीरा ईर्ष्या - व्देष के कारण माहुर दे देता है --

' सम्पंति प्रेम ने सा-साथ खेले हुए भाइयों को एक दूसरे के दु:ख में भी रक्त पिपासु बनाकर छोड दिया है, संयुक्त परिवार का अन्त सबल के निर्बल पर अत्याचार और अलगोझो से या शोषण से होता है।'[२]

हीरा होरी के गाय को माहुर देकर कहीं भाग जाता है। थानेदार आकर हीरा के घर की तलाशी लेना चाहता है परंतु किसान इसे अपनी बेइज्जती समझता है। होरी इस अवसर पर थानेदार को रिश्वत देने के लिए तैयार हो जाता है। परंतु धनिया इसका विरोध करती है। थानेदार को जब होरी से रुपये न मिले तो उसने मुखियों को पकडा और पचास रुपये वसूल किये। इन सारे संकटों के बीच होरी सोचता है --

---

१ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६४-६५
ओम प्रकाशन, ३०-बी, केवल पार्क एक्सटेंशन,
आजादपुर, दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण-१९८७

२ डॉ.गौतम सचदेव - प्रेमचंद कहानी शिल्प - पृ.११९
यूनाइटिड बुक हाउस, ४८७२, चाँदनी चौक,
दिल्ली-६, प्रथम संस्करण - १९८२

'जीवन में ऐसा तो कोई दिन ही नहीं आया कि लगान और महाजन को देकर कभी कुछ बचा हो।'[१]

इस पर हीरा भाग जाता है तो उसकी खेती होरी को करनी पड़ती है। साथ ही गोबर और झुनिया का सम्बन्ध बढ़ जाता है, जिससे झुनिया के पाँच महीने का गर्भ है और गोबर उसे घर पहुँचाकर शहर भाग जाता है। झुनिया को शरण देने के कारण होरी को जाति बाहर कर दिया जाता है। इसपर पंचायत बैठी और पंचों ने होरी पर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज का जुर्माना लगाना, परिणामत: उसका घर रेहन रख दिया गया और खलिहान में ही सारा अनाज बिरादरी के लिए तुल गया।

होरी का अनाज तुल जाने के बाद उसका बुरा हाल था। यहाँ तक नौबत आयी कि उसके घर में एक दिन खाना नहीं बना। अपनी पुत्री सोना के विवाह के लिए वह दुलारी सहुआइन से दो सौ रुपये सूद पर लेता है --

'होरी के जीवन में जो आर्थिक गिरावट आई और वह निरंतर कर्ज भार से लदता गया, उस की पृष्टभूमि में देश की उपरक्त आर्थिक दशा थी। दिन भर खटने के बावजूद उस के पास खाने के लिए अन्न और पहनने के लिए वस्त्र नहीं था। यह हालत तब थी, जब पूरा परिवार मिट्टी और पसीना एक कर रहा था।'[२]

होरी की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि वह अपनी लड़की रुपा का विवाह दो सौ रुपये वृध्द रामसेवक से लेकर कर देता है। वह अपनी लड़की का विवाह तो कर देता है परंतु उसे अत्यंत मानसिक कष्ट होता है। वह धर्म और मर्यादा को भी त्याग देता है। होरी को दरिद्रता ने इतना विवश कर दिया है कि वह भला-बुरा कुछ भी विचार करने में असमर्थ है। प्रेमचंदजी ने होरी की इस मानसिक स्थिति की सशक्त अभिव्यक्ति की है --

---

१. प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०० - सरस्वती प्रेस, २ । ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली २

२ संपादक - दयानंद पांड्येय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचना दृष्टि -पृ.१७३-१७४ भावना प्रकाशन, दिल्ली-९२, प्रथम संस्करण - १९८२

' होरी ने रुपए लिये तो उसका हाथ काँप रहा था, उसका सिर ऊपर न उठ सका, मुँह से एक शब्द न निकला, जैसे अपमान के अथाह गढ़े में गिर पड़ा है और गिरता चला जाता है। आज तीस साल तक जीवन से लड़ते रहने के बाद वह परास्त हुआ है और ऐसा परास्त हुआ है कि मानो उसको नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया है और जो आता है, उसके मुँह पर थूँक देता है।'[१]

अन्त में होरी किसान न रहकर एक मजदूर बन जाता है जिसे वह अपना अपमान मानता है --

' किसान बेचारा भूमि का स्वामी न होने पर भी सरल और भावुक इतना था कि किसानी को मान-मर्यादा समझ कर मजदूरी को अपमान मानता था। फलत: भूमि से वह इतना प्रेम करता था कि जीते जी उसे छोड़ता नहीं था। उसके इसी भूमि प्रेम के कारण जमींदार, महाजन और बनिये उसे खूब लूटते थे।'[२]

होरी अन्त में मजदूरी करते हुए मृत्यु को प्राप्त होता है --

' गोदान' में प्रेमचंदजी ने दिखाया है कि महाजनी सभ्यता ने निर्मम रुप से किसान व जमींदार को अपने चंगुल में फँसा रखा है जिससे किसान मजदूर बनकर और जमींदार कर्जदार बनकर भूमिहीन हो अपना अस्तित्व खो जा रहे हैं। भूख, बीमारी, जड़ता और वेदना से पूर्ण परंपराजीवी होरी अपनी मरजाद की रक्षा में सब कुछ, यहाँ तक कि अन्त में मजदूर बन अपनी जान तक होम देता है।'[३]

' गोदान' में होरी की आर्थिक दयनीय स्थिति समग्र कृषक वर्ग की स्थिति का प्रतीक है।

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९५- सरस्वती प्रेस, ३४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ. गौतम सचदेव - प्रेमचंद कहानी-शिल्प - पृ.१२१ यूनाइटिड बुक हाउस, ४८७२, चाँदनी चौक, दिल्ली-६ प्रथम संस्करण - १९८२

३ डॉ.कलावती प्रकाश - महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन पृ.२७-२८, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

भेंट और नजराना व्दारा शोषण —

प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में महाजनी सभ्यता का सजीव और यथार्थता के साथ परिपूर्ण इतिहास प्रस्तुत किया है। प्रेमचंदजी के अनुसार जमींदार, सेठ, साहूकार, मिल मालिक आदि अनेक शक्तियाँ किसान को अपना शिकार बनाती है। भिन्न-भिन्न माध्यम से उसका शोषण करते हैं। 'गोदान' में रायसाहब के यहाँ एक पार्टी है और साथ ही रामलीला का आयोजन किया गया है। इसके लिए 'शगुन' के नामपर बीस हजार रुपये इकट्ठा करना है —

'गोदान' के रायसाहब राष्ट्रवादी विचार के हैं किन्तु भेंट और नजर के लिए जनता का खून चूसने में संकोच नहीं करते। दशहरे के अवसर पर धनुष यज्ञ की तैयारियाँ जोर शोर से हो रही हैं और इस शुभ अवसर पर प्रजा का आर्थिक शोषण तो होना ही चाहिए।'[१]

रायसाहब होरी से कहते है —

'गलती न करना और देख, असामियों से ताकीद कर के कह देना कि सब-के-सब शगुन करने आयें।'[२]

होरी को भी पाँच रुपये देने है, जिसकी चिंता उसे सताती है। जमींदारों के यहाँ जब शादी-ब्याह हो, यज्ञ हो तो कुछ-न-कुछ भेंट देनी ही पड़ती है। जमींदार अगर धर्म के नामपर कोई कार्य करता है तो असामियों को इस अवसर पर बेगार देनी पड़ती है —

'शगुन तो देना ही है चाहे अपनी खाल बेचकर ही क्यों न दे। और कृषक का आर्थिक शोषण अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है जब पंच परमेश्वर

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२६८
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१३, सरस्वतीप्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

होरी पर १०० रु.नकद और तीस मन अनाज डांड लगाने का अपना ईश्वरीय निर्णय देता है, इसलिए कि उसने अपने बेटे की बहू को घर में रख लिया है उसे निकाल कर सड़क की भिखारिन नहीं बना दिया है, क्योंकि सामन्ती शासन में मानवता पाप है, उसके लिए प्रायश्चित का विधान है। अन्याय और अत्याचार की ही यहाँ विजय है। पंचों में परमेश्वर का निवास देखनेवाला होरी लुट कर भी धर्म के नाम पर सब कुछ सह लेता है।'[१]

होरी इस सम्बन्ध में अपनी पत्नी धनिया को डाँटता है -' तू क्यों बोलती है धनिया। पंच में परमेसर रहते हैं। उनका जो न्याय है, वह सिर आँखों पर। अगर भगवान की यही इच्छा है कि हम गाँव छोड़कर भाग जायँ, तो हमारा क्या बस। पंचों, हमारे पास जो कुछ है, वह अभी खलिहान में है। एक दाना भी घर में नहीं आया, जितना चाहो, ले लो। सब लेना चाहो, सब ले लो। हमारा भगवान मालिक है, जितनी कमी पड़े, उसमें हमारे दोनों बैल ले लेना।'[२]

' नजराना, शगुन, जुर्माना, दस्तरी, डाँड, चंदा के अलावा भी किसानों से नकद रुपये लेने के और भी तरीके हैं। गाँव की संपूर्ण जमीन का मालिक जमींदार होता है। अत: द्वार पर खूँटा गाड़ने के लिए भी नजराना देना पड़ता है। जमींदारों की बार-बार मिन्नत करनी पड़ती है।' गोदान' में एक स्थान पर गोबर होरी से कहता है —

' यह तुम रोज-रोज मालिकों की खुशामद करने क्यों जाते हो ? बाकी न चुके तो प्यादा आकर गालियाँ सुनाता है, बेगार देनी ही पड़ती है, नजर-नजराना सब तो हम से भराया जाता है। फिर किसी की क्यों सलामी करें।'[३]

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२६८-२६९ अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२, सं.१९७९

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१०८, - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ - वही - पृ.१६ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

होरी गोबर को समझाते हुए कहता है --

' यह इसी सलामी की बरकत है, कि व्दार पर मडैया डाल ली और किसी ने कुछ नहीं कहा । घूरे ने व्दार पर खूँटा गाडा था, जिस पर कारिन्दों ने दो रुपए डाँड ले लिये थे । तलैया से कितनी मिट्टी हमने खोदी, कारिन्दा ने कुछ नहीं कहा । दूसरा खोदे तो नजर देनी पडे । '[१]

इसके अलावा बेगार लेना एक रीति है । गाँव में कुछ जमीन होती है । उसपर जमींदार का पूरा अधिकार होता है । जमींदार कृषकों से उत्पादन का सारा कार्य बेगार से करवाता है । ' गोदान ' के रायसाहब बेगारों से काम करवा लेते है परंतु उन्हें खाने देने के पक्ष में नहीं हैं । किसानों के दु:खित दशा का वर्णन प्रेमचंदजी ने रामसेवक नामक पात्र के मुखसे किया है --

' थाना-पुलिस, कचहरी-अदालत सब है हमारी रक्षा के लिए, लेकिन रक्षा कोई नहीं करता । चारों तरफ लूट है । जो गरीब हैं, बेकस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं । भगवान न करें, कोई बेईमानी करें, यह बडा पाप है, लेकिन अपने हक और पाप के लिए लडना उससे भी बडा पाप है । तुम्हीं सोचो, आदमी कहाँ तक दबे ? यहाँ तो जो किसान है, वह सब का नरम चारा है । पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे, तो गाँव में रहना मुश्किल । जमींदार के चपरासी और कारिन्दों का पेट न भरे तो निबाह न हो । थानेदार और कानिसिटिबिल तो जैसे उसके दामाद है । जब उनका दौरा गाँव में हो जाय, किसानों का धरम है, वह उनका आदर सत्कार करें, नगर-न्याज दे, नहीं एक रिपोर्ट में गाँव का गाँव बँध जाय । '[२]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६ - सरस्वती प्रेस, २ । ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९२ - सरस्वती प्रेस, २ । ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

जमींदार को सरकार की ओर से अच्छी रकम मिलती थी फिर भी जमींदार किसानों से भिन्न-भिन्न तरह से बेगार लेते थे। `गोदान` में रायसाहब इसीतरह बेगार लेते है --

` मिनिस्ट्री से जरूर अच्छी रकम मिलती थी, मगर वह सारी की सारी उस मर्यादा का पालन करने में ही उड जाती थी और रायसाहब को अपना राजसी ठाठ निभाने के लिए वही असामियों पर इजाफा और बेदखली और नजराना करना और लेना पडता था।`[१]

` गोदान` के रायसाहब सरकार और जनता इन दोनों का भी समयानुसार पदा लेते है और अपना स्थान बनाए रखते है --

` रायसाहब का चरित्र उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रतीत होता है जो एक ओर तो जनता के श्रध्दापात्र बनने के लिए जेल जाते हैं और अपने राष्ट्रवादी होने का परिचय देते हैं दूसरी ओर जमीदार परंपरा का निर्वाह करने के लिए` नजरे और डालियाँ ` भेजकर सरकार के भी कृपा पात्र बने रहते है।`[२]

इसके अतिरिक्त गाँव के मुखिया,पंच किसानों को चूसते हैं। `गोदान` में गोबर और झुनिया के सम्बन्धों को लेकर होरी पर १०० रु.नकद और ३० मन अनाज की डाँड पंचों व्दारा लगायी जाती है। होरी की गाय मरने पर हीरा के घर की तलाशी लेने थानेदार आते है तो उन्हें मुखिया के माध्यम से रिश्वत दी जाती है। इसके अतिरिक्त चपरासी,पहरेदार,कारिन्दा,मुख्तार यह भी भोले-भाले किसानों से कुछ न कुछ लेते रहते हैं।

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२७० - सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

२ डॉ.ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.१३७ - जवाहर पुस्तकालय,सदर बाजार,मथुरा-२, प्रथम संस्करण - १९७९